International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157, Impact Factor: RJIF 5.22
www.multiresearchjournal.com
Volume 1; Issue 2; March 2016; Page No. 37-38

जनता पार्टी व लोक दल के समय भारत–अमेरिका सम्बन्ध (सन् 1977 से सन् 1980 तक)

डॉ० दिलबाग सिंह बिसला

निर्देषक राजीव गांधी शोध एवं अध्ययन केन्द्र, आर्यनज संस्थान, रतीबाड़, भोपाल

प्रस्तावना

नवम्बर, 1976 के चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के राष्ट्रपति फोर्ड की हार हुई और 20 जनवरी, 1977 को डमोकेरट पार्टी के जिमी कार्टर अमेरिका के राष्ट्रपति बन गये। उन्होनें अपने चुनाव अभियान में घोषणा की थी कि अमेरिका सभी देशों से सामान्य मैत्री सम्बन्ध रखेगा।[1] सन् 1977 के आरम्भ में भारत में हुए राजनीतिक परिवर्तन पर प्रसन्नता प्रगट की थी और कहा था कि, "भारत के चुनाव शेष संसार के प्रजातन्त्रों के लिए प्रेरणादायक होने चाहिये।"[2]

अमेरिका के सरकारी अधिकारियों ने भी भारत के चुनाव परिणामों पर बहुत प्रसन्नता प्रकट की थी क्योंकि भारत जनसंख्या की दृष्टि से संसार का दूसरा बड़ा देश हैं और प्रजातन्त्रात्मक सरकार की दृष्टि से सबसे बड़ा देश हैं।

20 मई, 1977 को मोरारजी देसाई के प्रधानमंत्री बनने पर राष्ट्रपति कार्टर ने अपने संदेश में हार्दिक बधाई देते हुए भारत–अमेरिका सम्बन्धों को और अधिक सुदृढ़ बनाने की आशा प्रकट की थी।[4] कार्टर ने अपने संदेश में यह भी कहा था कि, भारत और अमेरिका मिलकर दुनियां में शांति, न्याय और आर्थिक प्रगति के समान उद्देश्य प्राप्ति के लिये बहुत कुछ कर सकते हैं।[5] प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने अपने उत्तर में आशा व्यक्त की थी, कि अमेरिका भारत के विकास में सहायक होगा। क्योंकि दोनों ही देश व्यक्ति की स्वतन्त्रता और प्रजातंत्रीय व्यवस्था में विश्वास करने वाले हैं।[3]

भारत–अमेरिकी सम्बन्धों में नाराजगी का एक कारण अमेरीकी गुप्तचर संगठन सी.आई. ए. द्वारा भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना रहा था। अमेरीकी प्रशासन द्वारा बार–बार यह आश्वासन दिया जाता रहा था कि भारत के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा, किन्तु ये केवल आश्वासन ही रहे। इसी क्रम में कार्टर प्रशासन ने यह घोषणा की थी कि वह भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा। राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद के निधन पर राष्ट्रपति कार्टर ने जब अपनी मां तथा पुत्र को व्यक्तिगत प्रतिनिधि बनाकर दिल्ली भेजा था तो कार्टर के इस कार्य से भारत प्रसन्न हुआ था।[4] इस अवसर पर आये सीनेटर चार्ल्स परसी ने अमेरीकी प्रशासन को वापस लौटने पर बताया था कि अमेरिका का हित भारत के साथ मित्रता में है।[5] उनका मत था कि भारत के साथ पारस्परिक सम्बन्ध भारतीय उपमहाद्वीप पर अधिक सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में सहायक होगें। इससे बृहद रूप में शान्ति और समृद्धिशाली विश्व का उदय होगा। सीनेटर का मत था कि अमेरीकी विदेशनीति का मूल ध्येय इस क्षेत्र के देशों के बीच मित्रता और रचनात्मक सम्बन्ध होनें चाहिए।

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति कार्टर को भारत की राजकीय यात्रा के लिये निमंत्रित किया था। यह निमंत्रण कार्टर के पत्र के उत्तर में था। 21 मई, 1977 को भारत के लिये मनोनीत अमेरीकी राजदूत राबर्ट फ्रांसिस गोहीन, दिल्ली पहुचे थे। मुख्य शिष्टाचार अधिकारी के स्वागत के दौरान गोहीन ने कहा था कि उनका मुख्य कार्य दोनों देशों के बीच सम्बन्धों को ठोस बनाकर आपसी विश्वास को बढ़ाना है।12 26 मई, 1977 को परिचय पत्र प्रस्तुत करते हुए उन्होनें कहा था कि दोनों देशों के सम्बन्धों का भविष्य उज्ज्वल हैं।[6]

भारत और अमेरिका के सम्बन्धों में निकटता को आगे बढ़ाने के लिये नई सरकार की स्थापना के पश्चात पहला ठोस कदम भारत–अमेरीकी शिक्षा शास्त्री उप–आयोग की बैठक के रूप में 25 मई 1977 को उठाया गया था। संयुक्त आयोग के शिक्षा तथा संस्कृति उप–आयोग की दो दिन की बैठक की समाप्ति पर दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को आगे बढ़ाने पर बल दिया था।[7]

विदेश मंत्रालय से सम्बन्धित संसदीय सलाहकार समिति की बैठक में विदेश मंत्री वाजपेयी ने दो बातों का उल्लेख किया था जो भारत और अमेरीका के बीच सम्बन्धों को आगे बढ़ाने के मार्ग में बाधाओं के रूप में आती थी। एक थी पाकिस्तान को हथियारों की आपूर्ति और दूसरी तारापुर परमाणु बिजली घर के लिये यूरेनियम की सप्लाई जो इस शर्त पर करने का निर्णय लिया था कि दोनों देश अपने भावी सम्बन्धों पर वार्तालाप आरम्भ करेगें। यह आपूर्ति कई महीनों से रूकी पड़ी थी, कारण था प्रधानमंत्री देसाई का यह बार–बार कहना था कि भारत विस्फोट विरोधी नीति की घोषणा करता है, हमें यूरेनियम केवल शांतिपूर्ण कार्यों के लिये ही चाहिये।

8 अक्टूबर, 1977 को अमेरीकी राष्ट्रपति के समक्ष नये भारतीय राजदूत नानी पालकीवाला ने अपने पद के परिचय पत्र पेश किये थे। राष्ट्रपति कार्टर ने उन्हें आश्वासन दिया था कि वे भारत के साथ अपने देश के सम्बन्धों को और अधिक विस्तृत करने के इच्छुक हैं।[8] भारतीय राजदूत पालकीवाला ने भारत की ओर से अमेरिका के साथ सम्बन्धों को सुधारने का आश्वासन दिया था।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में भाग लेने गये भारत के विदेशमंत्री वाजपेयी ने न्यूयार्क में पत्रकारों से वार्ता के दौरान स्पष्ट किया था कि दोनों के मध्य मैत्री सम्बन्धों का एक नया अध्याय प्रारम्भ किया जा रहा है।[9] उन्होनें राष्ट्रपति कार्टर और विदेशमंत्री वाजपेयी को आश्वासन दिया था कि वे भारत–अमेरीकी सम्बन्धों को और अधिक रचनात्मक रूप में देखना चाहते हैं। निश्चित ही कार्टर भारत और अमेरिका के बीच दीर्घकालीन सहयोग बढ़ाना चाहते थे।

27 अक्टूबर 1977 को वांशिगटन में दो दिवसीय भारत–अमेरिकी आर्थिक और व्यापारिक समिति की बैठक में अमेरिका ने भारत को अधिक आर्थिक सहयोग का आश्वासन दिया था। भारतीय तथा आर्थिक विभाग के उपसचिव रिचर्ड कपूर ने अमेरीकी प्रतिनिधि मण्ड़ल का नेतृत्व किया था।

भारत–अमेरिका सम्बन्धों में एक महत्वपूर्ण बदलाव कार्टर की भारत यात्रा के दौरान देखा जा सकता है। जनवरी, 1978 में जिम्मी कार्टर भारत की त्रिदिवसीय यात्रा पर आये थे तब कार्टर ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा था कि भारत–अमेरिका के बीच दोस्ती के गहरे बंधन हैं। विश्व शांति, प्रजातन्त्रात्मक मूल्यों और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के मामले में भी दोनों राष्ट्रों के समान दृष्टिकोण हैं। आशा है कि इन मूल्यों एंव अधिकारों के लिए दोनों देश साथ–साथ कार्य करते रहेगें।[10]

घोषणा–पत्र में मूल मानवीय अधिकारों के प्रति दोनों देशों की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई थी तथा घोषणा की गई थी कि "हम लोकतान्त्रिक शासन पद्धति में अड़िग विश्वास रखते हैं। जिसके

अन्तर्गत नागरिकों को कानून के अनुसार बुनियादी आजादी की गारन्टी दी जाती हैं और उन्हें अपने प्रतिनिधियों को चुनने तथा अपना भविष्य निर्धारित करने का अधिकार मिलता है।"

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विवादों को सुलझानें के लिए शान्तिपूर्ण तरीकों को उपयोगी बतलाया गया था और युद्ध के प्रयोग को गैर उपयोगी बतलाते हुये यह स्पष्ट किया था कि, "हम घोषणा करते हैं कि राजनीतिक विवादों को युद्ध के जरिए तय करना हमें स्वीकार नहीं है। हम दोनों देश इस बात की हर सम्भव कौशिश करेगें, कि एक दूसरे के साथ सुलह समझौते के जरिये और संयुक्त राष्ट्र के दिशा निर्देश के अन्तर्गत अपने विवादों को सुलझाए तथा इसी प्रकार, दूसरों के विवादों को सुलझाने में मदद करें।"

अणुशक्ति के प्रयोग और प्रसार के प्रश्न पर इस संयुक्त घोषणा में यह विचार व्यक्त किया गया था कि भारत और अमेरिका ने संयुक्त रूप से यह निर्णय लिया था कि वे परमाणुविक अस्त्रों की समाप्ति तथा इसके बढ़ते प्रसार को रोकने का प्रयास करेगें। क्योंकि युद्ध का भय दुनियां पर छाया हुआ था।[11]

भारत ने अमेरीकी राष्ट्रपति को स्पष्ट कर दिया था कि सोवियत संघ के साथ भारत के सम्बन्ध मित्रता के हैं और भारत चाहता है कि विश्व की समस्याओं के समाधान के लिए अमेरिका और सोवियत संघ सहयोगात्मक भावना से करीब आएं। संसार का तनाव इन दो महाशक्तियों के सहयोगपूर्ण कार्य से कम किया जा सकता हैं। इसके उत्तर में कार्टर ने कहा था कि, "अमेरीका–सोवियत संघ के साथ मिलकर अल्प विकसित देशों की स्थिति सुधारने के लिए तैयार है।"

शिखर वार्ता में कार्टर और देसाई के मध्य हिन्द महासागर पर भी बातचीत हुई थी। हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र बनाए जाने के सम्बन्ध में कार्टर ने देसाई से कहा था कि इस विषय में सोवियत संघ से जो वार्ता हुई उसमें अच्छी प्रगति हुई है, अतः आशा है कि भविष्य में हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र बनाए जाने के सम्बन्ध में समझौता हो जाएगा।

भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक और वैज्ञानिक, शिक्षा, संस्कृति तथा विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में सहयोग सम्बन्धी एक प्रोटोकाल पर भी हस्ताक्षर किए गए थे। इसके अलावा अमेरिका के विदेश मंत्री साहरस वांस और भारत के विदेश मंत्री वाजपेयी ने लैण्डसट उपग्रह के भारत द्वारा उपयोग पर भी एक ज्ञापन पत्र पर हस्ताक्षर किए थे।

कार्टर की भारत–यात्रा से लाभ तो निश्चय ही हुआ था। इससे भारत अमेरिकी सम्बन्धों में मधुरता आई थी। लेकिन परमाणु इंधन, परमाणु अप्रसार संधि के प्रश्न पर प्रकट हुए मतभेद अपनी जगह कायम रहें।

जून, 1978 में प्रधानमंत्री देसाई एंव विदेशमंत्री वाजपेयी की अमेरीकी यात्रा से इन मतभेदों को अपेक्षाकृत अधिक प्रखर रूप से व्यक्त होने का अवसर मिला था। इस यात्रा के दौरान यह स्पष्ट हो गया था कि जनता सरकार भारत की परम्परागत गुटनिरपेक्षता की नीति को छोड़ने के लिये तैयार नहीं है। सेन फ्रांसिसको में 'वर्ल्ड अफेयर कौंसिल' और कोमन वैल्थ क्लब को सम्बोधित करते हुए देसाई ने कहा था कि, "हमारी गुटनिरपेक्षता सिर्फ नीति ही नहीं है, यहां एक धर्म है। इसके द्वारा हमें अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के गुण–दोशों के आधार पर परखने में सहायता मिलती है।"[12] इसी तरह वाजपेयी ने कहा था कि, "भारत न पश्चिम समर्थक है न पूर्व समर्थक, लेकिन वह भारत समर्थक है।" दोनों देशों के मध्य परमाणु प्रश्न पर केवल काम चलाऊ सहमति ही हो पाई थी।

अमेरीकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के निमन्त्रण पर भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने 9 से 15 जून 1978 तक संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकारी यात्रा की थी। दोनों देशों के मध्य आर्थिक आदान–प्रदान से जुड़े प्रश्नों पर यह निर्णय दोहराया गया था कि आर्थिक विकास के वृद्धि की यहां काफी सम्भावनाएं हैं। कार्टर ने यह भी कहा था कि उक्त सम्भावनाओं का पता लगाने के लिए इस वर्ष बाद में किसी भी समय वाणिज्य मंत्री क्रेप्स भारत आयेंगी।[13] इस तरह देसाई की अमेरीकी यात्रा से कोई भारतीय विदेश नीति पर प्रभाव नहीं पड़ा। जिसमें गुटनिरपेक्षता की उस नीति का परित्याग नहीं किया जिसे श्रीमती गांधी चला रही थी।

देसाई की अमेरीकी यात्रा कार्टर की भारत यात्रा की तुलना में अधिक सफल रही थी। भारत–अमेरिका के मध्य आर्थिक और तकनीकी सहयोग के अनेक कार्यक्रमों को चलाने एंव बढ़ाने के लिए समझौते हुए थे। इसी तरह भारत–अमेरिकी सम्बन्धों पर दृष्टिपात करने पर दृष्टिगोचर होता है कि अमेरिका ने भारत में परिवर्तित नई सरकार का स्वागत करते हुए प्रसन्नता प्रकट की थी एंव कहा था कि भारत–अमेरीकी सम्बन्धों को घनिष्ठ बनाने के लिए नए प्रयासों की आवश्यकता है। साथ ही में भारत और अमेरिका दोनों ही देश विश्व शान्ति, न्याय तथा आर्थिक प्रगति के समान लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहेगें। इसी क्रम में दोनों देशों के शासन प्रमुखों की यात्राएं एक–दूसरे के लिए बहुत ही उपयोगी रही थी।

लेकिन जनता शासन के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री देसाई की अमेरीकी यात्रा तथा अमेरिकी राष्ट्रपति की भारत यात्रा के बावजूद ज्वलन्त द्विपक्षीय राजनैतिक प्रश्नों पर कोई सहमति नहीं हो सकी थी दोनों ही देश अपने–अपने दृष्टिकोणों पर आग्रहशील बने रहे। इसी तरह भारतीय विदेशमंत्री एंव अमेरीकी विदेश मंत्री के मध्य भी कई वार्ताएं हुई लेकिन दोनों देशों के बीच बुनियादी मतभेद दूर नहीं हो पाया था। दोनों पक्षों का यह आग्रह की उनका स्वंय का ही दृष्टिकोण सही है और उसने किसी भी प्रकार के बदलाव की आवश्यकता नहीं है। इसी का परिणाम यह हुआ था कि वार्ताओं के बाद भी आम सहमति नहीं विकसित हो पाई थी।

हम निष्कर्ष यही कहेंगे, कि जनता सरकार ने सोवियत संघ और अमेरिका के साथ अपने सम्बन्धों को दक्षता पूर्ण और नए ढ़ंग से विकसित करने का प्रयत्न किया और भारत सोवियत संघ सम्बन्धों के पुराने समीकरण को बदलने की चेष्टा भी की, लेकिन मित्रता के आधार पर सम्बन्धों को बनाए रखने की दिशा में नई पहल तो की, किन्तु सम्बन्धों की मूलभूत आवश्यकताओं की प्राथमिकता को नहीं बदला।

सन्दर्भ

1. टाईम्स आफ इण्डिया, 23 मार्च, 1977, नई दिल्ली।
2. वेद प्रताप वैदिक, "भारतीय विदेश नीतिः नये दिशा संकेत," नई दिल्ली, 1980 ,पृ0 75
3. हिन्दू , 21 मार्च , 1979, मद्रास।
4. हिन्दुस्तान टाइम्स, 3 जनवरी, 1978, नई दिल्ली।
5. वेद प्रताप वैदिक, "भारतीय विदेश नीतिः नये दिशा संकेत," नई दिल्ली, 1980 ,पृ0 78
6. टाइम्स आफ इण्डिया, 28 मई, 1977, नई दिल्ली।
7. स्टेट्स मैन, 7 अक्टूबर, 1977, नई दिल्ली।
8. टाइम्स आफ इण्डिया, 9 अक्टूबर, 1977, नई दिल्ली।
9. इण्डियन एक्सप्रैक्स , 10 अक्टूबर, 1977, नई दिल्ली।
10. टाइम्स आफ इण्डिया, 2 जनवरी, 1978, नई दिल्ली।
11. हिन्दुस्तान टाइम्स, 4 जनवरी 1978, नई दिल्ली।
12. टाइम्स आफ इण्डिया, 12 जून, 1978, नई दिल्ली।
13. वेद प्रताप वैदिक, भारत–अमेरिका संयुक्त विज्ञप्ति, परिशिष्ट, पृ0 135